264 P
915
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
1325/70/71
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 915

S ✓
2011

915

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
15 AUG. 1932

॥ ओ३म् ॥

* वन्देमातरम् *

* युवक उत्साह *

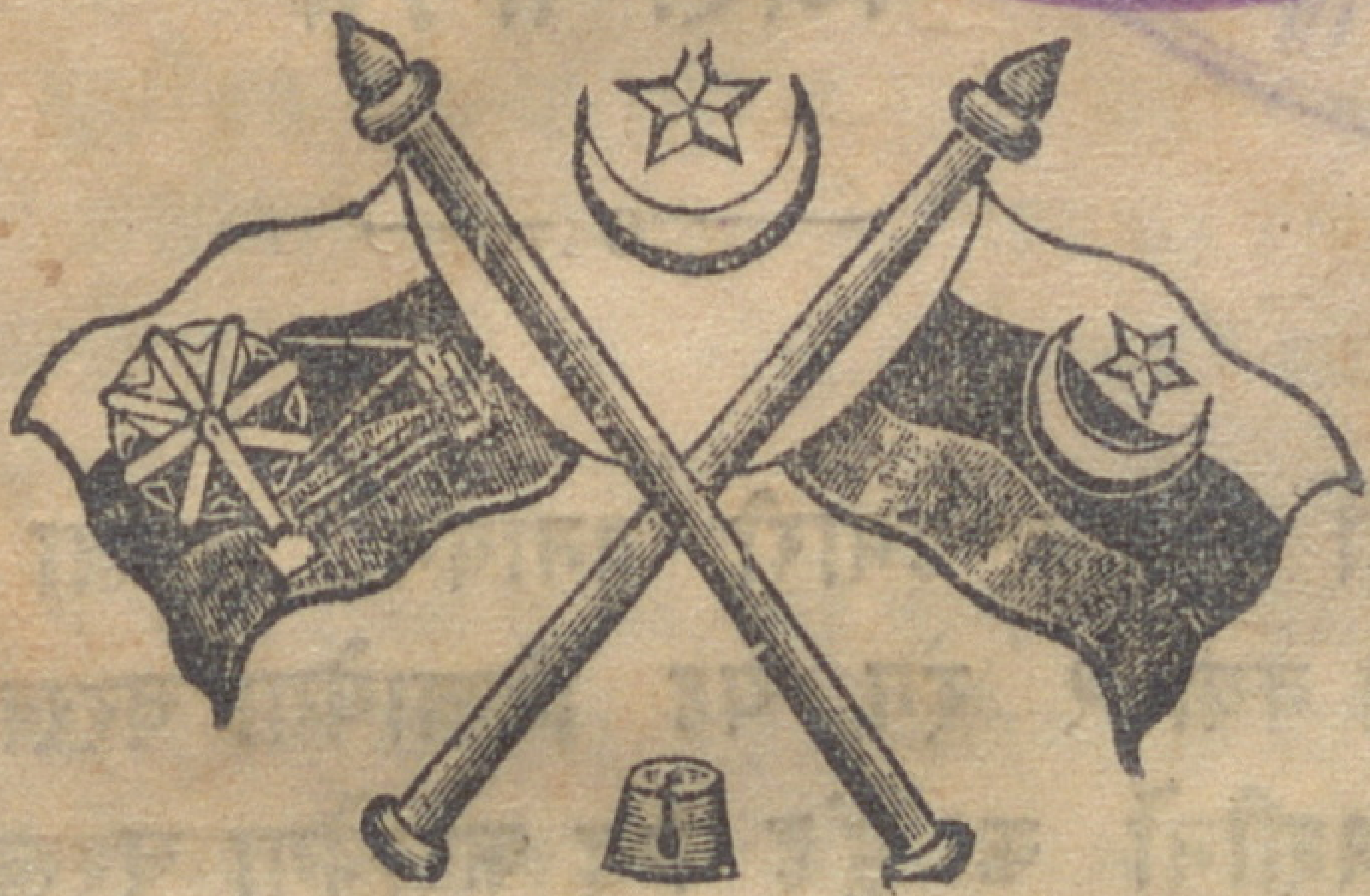

लेखक—अमरनाथ आसी
काशीपुर जिला नैनीताल

जगदीश प्रेस काशीपुर में छपा

प्रथमवार २०००   मूल्य)॥

किताब मिलने का पताः—स्वतन्त्र जवाहर युवक सभा काशीपुर

891.431
As41Y

❀ वन्देमातरम् ❀

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 915
Date 24.12.71
GOVT. OF INDIA

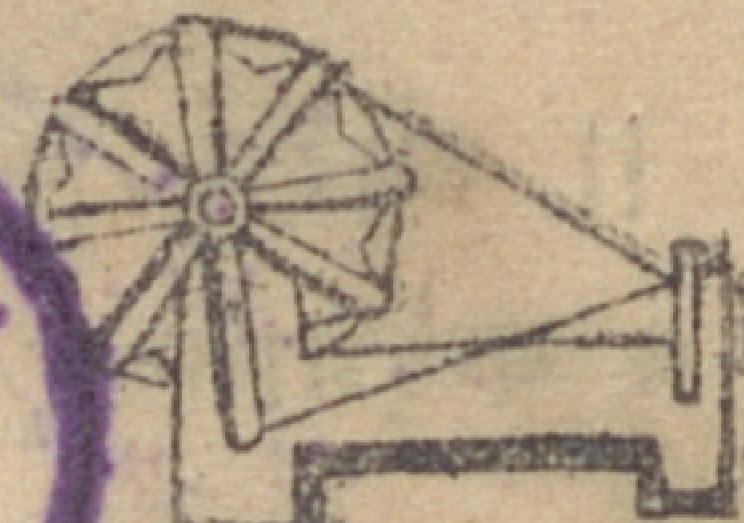

गजल ॥१॥

———:o:———

बिगड़ी इज्जत हमारी बनावेगा चरखा ।
देखये क्या २ रंग यह दिखायेगा चरखा ॥
गन्न मशीनों का मुंह बन्द करायेगा चरखा ।
उदू के दिलों को हिलायेगा चरखा ॥
देशी मल बल व मखमल बनायेगा चरखा ।
धोखे बाजों से बाजी जितायेगा चरखा ॥
हक हमारे सभी ये दिलायेगा चरखा ।
इस भारत को स्वतन्त्र करायेगा चरखा ॥
सदा घूं घूं की अब यह सुनायेगा चरखा ।
खुशी सबमी के दिल दिखायेगा चरखा ॥

गजल ॥२॥

प्राण मित्रों भले ही गवाना, पर न झंडा यह नीचे झुकाना ।
तीन रंगा है झंडा हमारा, बीच चरखा चमकता सितारा ॥
शान है यह ही इज्जत हमारी, सर झुकाती इसे हिन्द सारी ।
इस पै सब कुछ खुशी से चढ़ाना, पर न झन्डा यह नीचे झुकाना ॥
जिन्दा दिल ही है इसको उठाते, मरद है इस पर सर तक चढ़ाते।
तुम भी सारी मुसीबत उठाना, पर न झंडा यह नीचे झुकाना ॥
रे क्या भूले हो जलीवाला बाग, या ओडायर का इतिहास काला ।
गोलियों की लगी जब झड़ी थी, नींव आज़ादगी की पड़ी थी ॥
याद होगा वह खूं में नहाना, पर न झन्डा यह नीचे झुकाना ।
उसने तो था न क्या जुल्म ढाया, पेट के बल था हमको चलाया
कोसों बच्चों को पैदल भगाया, मां व बहिनों को घर २ रुलाया ।
याद हो गर तुम्हें वह फसाना, पर न झन्डा यह नीचे झुकाना ॥
और अब भी न क्या हो रहा है, कौम सुख नींद में सो रहा है ।
लाखों खाते न भर पेट खाना सच बोलो तो है जेल खाना ॥
है इसी से छिड़ा यह तराना, होना आज़ाद या मिट ही जाना ।
बस भला हो जो अंग्रेज़ जागे, लोभ हिन्दी हकूमत का त्यागे ॥
वरना बदला है यह क्या ठिकाना, उनको बदलेगा सारा जमाना ॥
गायेंगे आज से हम यह गाना, हिन्द होगा न अब जेल खाना ।
बस यह करले अहद मर मिटेंगे, पर न इस प्रण से तिल भर हटेंगे ॥
हम ही क्या कह रहा सब जमाना, दूध माता का तुम न लजाना ।

गजल ॥३॥

देश की खातिर अब हम तो जेल खाने जायेंगे।
जान गर तन में है तो स्वराज हम ही पायेंगे॥
देख कर सूरत मेरी सब शान्ति रुप हो जायेंगे।
हुक्काम सब घबरायेंगे और नाना जी शरमायेंगे॥
जेल की वरदी में जिस दम देखें मामा जी मुझे।
भानजे को देख दुख में बन्देमातरम गायेंगे॥
गर रन्ज उनको हुआ इस हालते गम पर मेरी।
ना खलफ इंगलेन्ड में वह नाना जी कहलायेंगे॥
जिस घड़ी वापिस भ्रकां आओगे आसी जेल से।
टीके में स्वराज देंगे हाथ में हम लायेंगे॥

गजल ॥४॥

भारत में जब से आई अंग्रेजी अमलदारी।
कंगाल हो गये हैं आई है विपत भारी॥
लूटा खसोटा हमको लंदन में ले गये सब।
भारत में जुल्म ढाये की है बड़ी गद्दारी॥

नाराज देव हो गये कपड़ों में लख के चरबी ।
अफसोच पहनते हैं मन्दिर के भी पुजारी ॥
लाखों वतन के आशिक दुश्मन की जेल में हैं ।
हिन्दी सभी मिटादें बेढंगी यह रफ़तारी ॥
मासूम तिफलो ज़न की रंग आहें लाये आसी ।
भारत के शहीदो का रहता है कलम जारी ॥

गजल ॥५॥

आफरीं हिन्दोस्ता ऐसे ही बीर हुआ करें ।
हुब्बे वतन और धर्म्म पर ॥
जानो तन से मुआ करे ।
माता को दुख में देख कर ॥
चैन से बैठते न वह ।
बैरस्टरी को छोड़ कर ॥
महमाने जेल हुआ करें ।
हसदो गरुर त्याग दें ॥
चरखे से दिल लगायें सब ।
दाखिल हो गान्धी फौज में ॥

दरे इबराज वा करें ।

जीवन यह फिर न आयेगा ॥

खाली न वक्त खोओ तुम आसी दिखादो बीरता ।

दुश्मन के सर नवा करें ॥

गजल ॥६॥

लाल भारत में किया ईश ने प्यारा गान्धी ।
शान और फख्र है माता का सहाग गान्धी ॥
सब पड़े भारती फिरङ्गिश की गुलामी पाये ।
अब कद्रू जुल्म से बचवायेगा प्यारा गान्धी ॥
हार सिंघार है मोती लो जवाहर सब्बा ।
मिसले जूही के बना फूल हजारा गान्धी ॥
कृष्ण ने चक्र से दुष्टों का सदा नाश किया ।
जेब देता है बहुत चरखे को प्यारा गान्धी ॥
जिस जगह कृष्ण ने अवतार लिया मथुरा में ।
उस ही खाने में पड़ा हिन्द दुलारा गान्धी ॥
राज ब्रिटिश में बहुत हिन्द में जुलमत छाई ।
बनके खुरशीद हुआ हिन्द सहारा गान्धी ॥

जुल्म सहते हुये मुद्दत हुई हमें आसी ।
शान्ति का हिन्द में अब होगा दुपारा गान्धी ॥

गजल ॥७॥

उठो नौजवानों तुम्हें क्या हुआ है ।
मुसीबत का तूफान बरपा हुआ है ॥
लगा करके तकिया क्या सोते पलंग पर ।
तुम्हें घर यह अब जेल खाना हुआ है ॥
जहां ऐश अशरत का झंडा गढ़ा था ।
वही हिन्द तुम से बेगाना हुआ है ॥
वतन पर तो हस्ती हमारी ही क्या है ।
बड़े लीडरों को जेल खाना हुआ है ॥
नहीं दिल में आसी है अगयार का डर ।
वतन पर जो सर को कटाना हुआ है ॥

गजल ॥८॥

उठो भारती हिन्द पर अब मरेंगे ।
मरेंगे मिटेंगे पर आजाद होंगे ॥
बिपत घन यह पश्चम से आये हैं भारत ।
कभी तो यह घन पश्चमी दूर होंगे ॥

हवा गर्म खादी जो पश्चम गई थी।
यकीं है हमें सारे मिल बन्द होंगे ॥
जिस धन से हुआ उनका आबाद लन्दन।
नतीजा है उसका वह भूखे मरेंगे ॥
सुदर्शन वह चरखा चला हिन्द आसी।
सभी हिन्द वाले अब आजाद होंगे ॥

गजल ॥९॥

करते हैं जुल्म हम पै वह मूज़ी नये २।
कानून जुल्म होते हैं रायज नये २ ॥
जोशे जुनू उधर है इधर सब्र बे मिसाल।
हुब्बे वतन के मिलते है रहबर नये २ ॥
पंजाब शेर ईश हमसे जुदा किया।
हुये जितेन्दर हिन्द में ब्रत वर नये २ ॥
बायें में तिरंगा है और दायें में सुदर्शन।
महमाने जेल हैं हर एक घर में नये २ ॥
आसी न डरें हिन्दियां अब जुल्मो सितम से।
बिपता के घन है छाये अब सर पर नये २ ॥